ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 178-179
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

पंचायती राज, राजनीतिक समाजीकरण तथा महिलाएं

गीता कुमारी
शोध अध्येत्री, समाजशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार) भारत

Received- 10.11. 2019, Revised- 15.11.2019, Accepted - 21.11.2019 E-mail: rksharpur2@gmail-com

सारांश : **राजनैतिक समाजीकरण,समाजीकरण का एक विशिष्ट रूप है। जब व्यक्ति की सीखने की प्रक्रिया का सन्दर्भ सामाजिक व्यवस्था से जोड़ते हैं, तो इस प्रक्रिया को समाजीकरण कहा जाता है और जब इसका सन्दर्भ राजनैतिक व्यवस्था से जोड़ दिया जाता है, तब इसे राजनैतिक समाजीकरण कहा जाता है । एक में व्यक्ति समाज के प्रतिउन्मुखी रहता है और दूसरे में समाज की एक उप–व्यव्स्था–समाजीकरण व्यवस्था की ओर उन्मुखी होती है । राजनैतिक समाजीकरण सीखने की वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा राजनैतिक व्यवस्था के मानकों एवं मूल्यों का आन्तरीकरण किया जा सकें तथा इन मानकों और मूल्यों को आने वाली पीढ़ियों को हस्तान्तरित कर सके । राजनैतिक समाजीकरण के द्वारा ही व्यक्ति राजनैतिक उत्तरदायित्वों एवं राजनैतिक व्यवहार प्रतिमानों को सीखता है एवं उन्हें अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करता है ।**

कुंजी शब्द– राजनैतिक, समाजीकरण, विशिष्ट रूप, सामाजिक व्यवस्था, उत्तरदायित्व, राजनैतिक, संस्कृति, प्रतिमान।

राजनैतिक समाजीकरण एक स्वस्थ राजनैतिक वातावरण के लिए स्वस्थ नागरिकों को तैयार करता है । फलतः राजनैतिक व्यवस्था एवं राजनैतिक संस्कृति दोनों सुदृढ़ होते हैं। विद्वानों में राजनैतिक समाजीकरण की निम्नलिखित परिभाषाएं दी गई है–

आमण्ड और पावेल– ''राजनैतिक समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा राजनैतिक संस्कृतियों को बनाए रखा या परिवर्तित किया जाता है तथा व्यक्तियों को राजनीति में दीक्षित करते हुए राजनैतिक बातों के बारे में उनके विचारों का निर्माण किया जाता है।''

हरबर्ट हीमेन–''राजनैतिक समाजीकरण जो सम्पूर्ण ज्ञान की प्रक्रिया का एक अंग है जिसके माध्यम से राजनैतिक पद्धति के सम्बन्ध में ज्ञान की प्राप्ति होती है उस ज्ञान के अन्तर्गत व्यक्तियों, घटनाओं, नीतियों तथा आवश्यकताओं से संवर्धित ज्ञान भी शामिल है।''

राजनीति समाजीकरण लोकतांत्रिाक प्रक्रिया के लिए भी एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। ग्रामीण क्षेत्राों में पंचायती राज के कारण हाल के वर्षो में राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई है। सरल शब्दों में कहा जाय जो राजनीतिक समाजीकरण एक ऐसा विचार है जो राजनीति स्थायित्व के लक्ष्य को प्राप्त करने की अपेक्षा करता है। राबर्टा सीगल के शब्दों में ''राजनीतिक समाजीकरण का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का प्रशिक्षण और विकास करना है जिससे वे राजनीतिक समाज के अच्छे कार्यकारी सदस्य बन सकें। राजनीतिक समाजीकरण व्यक्तियों के मन में मूल्यों, मानकों और अभिविन्यासों का विकास करता है जिसमें राजनीतिक व्यवस्था के प्रति विश्वास की भावना हो और वे अपने आपको अच्छे कार्यकारी नागरिक के रूप में बनाये रखें तथा अपने उत्तराधिकारियों के मन पर अमिट छाप छोड़ सके। सीगल के शब्दों में राजनीति समाजीकरण से अभिप्राय सीख की वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रचलित राजनीतिक व्यवस्था द्वारा स्वीकृत राजनीतिक आदर्श एवं व्यवहार पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तान्तरित होते हैं।'' गोल्डहेमर ने भी इसी प्रकार के विचार प्रकट किये हैं। इनके शब्दों में व्यापकतर अर्थ में ''राजनीतिक समाजीकरण वह तरीका है जिसके द्वारा समाज राजनीतिक संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित करता है।'' डेविड ईस्टन के शब्दों में ''किसी प्रकार से एक प्रौढ़ पीढ़ी युवा पीढ़ी को अपने जैसे प्रौढ़ प्रतिरूप में डालती है, यही समाजीकरण है।'' आर0 बियरस्टेड ने राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया को एक प्रकार की सामाजिक प्रक्रिया का स्वाभाविक अध्ययन माना है। उनके अनुसार किसी राज–व्यवस्था के सदस्यों द्वारा राजनीतिक दृष्टिकोण एवं व्यवहार की प्रतिकृति को विकसित करने से सम्बद्ध वैज्ञानिक अध्ययन को राजनीतिक समाजीकरण का अध्ययन कहा जाता है। आमण्ड एवं पॉवेल राजनीतिक समाजीकरण को एक ऐसी प्रक्रिया मानते हैं जिसके द्वारा व्यक्ति राजनीति संस्कृति में प्रवेश करता है। राजनीतिक वस्तुओं के प्रति ज्ञान प्राप्त करता है, अपने प्रतिमानों, अभिकांक्षाओं का निर्माण करता है, अपने व्यवहार की रीति निर्धरित करता है अर्थात् वह राजनीतिक संस्कृति एवं पद्धति का अंग बनता है, उनका मत है कि यह अवधारणा आधुनिक युग में इसलिए विशेष महत्व रखती है कि इसके माध्यम से राजनीतिक स्थायित्वता एवं विकास को सरलता से समझा जा सकता है। आधुनिक युग में नये राज्यों के उदय के

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

कारणवश, संचार साधनों में निरन्तर विकास के कारणवश, तकनीकी खोजों के परिणामस्वरूप समाजीकरण की प्रक्रिया आधुनिककरण की प्रक्रिया में विशेष स्थान रखती है। राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया बन जाती है क्योंकि यह नागरिकों के दृष्टिकोण से सम्बन्ध रखती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य आने वाली राजनीतिक पद्धति को मान्य प्रतिमान एवं व्यवहार के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त होता है। यह स्वाभाविक हे कि यह ज्ञान अहिस्ता–अहिस्ता बिना चेष्टा किये होता रहता है पर ज्ञान प्रयत्नों द्वारा भी प्राप्त किया जाता है। आमण्ड एवं पॉवेल इस प्रक्रिया को दो भागों में बांटते हैं: स्पष्ट एवं अस्पष्ट। इनका मत है कि नागरिक राजनीतिक वस्तुओं के प्रति ज्ञान केवल राजनीतिक प्रक्रिया में भाग नहीं ले रहे होते । प्रायः नागरिकों की राजनीतिक संस्कृति के अधिकांश भाग का निर्माण अप्रत्यक्ष रूप में ही होता है पर मनुष्य पर प्रत्यक्ष प्रभाव भी पड़ते हैं जो सम्भवतः उतना ही महत्व रखते हैं जितना कि अप्रत्यक्ष। सूक्ष्म में यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक समाजीकरण एक ऐसी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से नागरिक राजनीति पद्धति के उद्देश्यों, मानकों और उसके व्यवहार के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करता है। इसी के माध्यम से वह अपने उद्देश्यों, मांगों, अभिलाषाओं का निर्माण करता है। अपने व्यवहार की नीति बनाता हे अर्थात् राजनीतिक संस्कृति में प्रवेश करता है। इस प्रकार राजनीतिक समाजीकरण उन मूल्यों, प्रतिमनों और दृष्टिकाणों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त कराता है ताकि व्यक्ति अच्छे नागरिकों के रूप में आने वाली पीढ़ियों पर अच्छा प्रभाव डाल सकें। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जब बच्चा उत्पन्न होता है तो वह ज्ञान प्राप्त व्यक्ति नहीं होता। वह राजनीतिक ज्ञान आहिस्ता–आहिस्ता प्राप्त करता है। राजनीतिक समाजीकरण के लिए केवल ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है उसके यह भी आवश्यक हे कि समाज के जिन मूल्यों एवं प्रतिमानों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त हुआ है वह अपने मूल्य एवं प्रतिमान बना ले तभी वह अच्छा नागरिक बन सकेगा।

राजनीतिक समाजीकरण उस समय आरम्भ होता है जब एक बच्चा पर्यावरण में प्रवेश करता है। वह अनेक प्रकार की परिस्थितियों के सम्पर्क में आता है जिसके माध्यम से वह ज्ञान प्राप्त करता है। यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें बच्चा सत्ता, आज्ञा, विरोध, सहभागिता के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करता है । इंस्टन एवं डेनिंग बच्चे के जीवन में चार सत्रों का वर्णन करते हैं जिसके द्वारा बच्चा राजनीतिक–समाजीकरण एवं राजनीतिक संस्कृति में प्रवेश करता है –

– विशेष व्यक्तियों के माध्यम से सत्ता की मान्यता ।
– सार्वजनिक एवं निजी सत्त में अन्तर ।
– राजनीतिक संस्थाओं एवं व्यवहार के सम्बन्ध में ज्ञान ।
– राजनीतिक संस्थाओं और व्यक्ति विशेष के मध्य अन्तर।

प्रस्तुत अध्ययन जहानाबाद जिला के पंचायती राज पर आधारित है शोधकर्ती ने जहानाबाद जिला के विभिन्न प्रखण्डों से विभिन्न ग्राम पंचायतों का चयन करते हुए 200 पंचायत महिला प्रतिनिधियों का चयन किया है ।

प्रस्तुत अध्ययन में साक्षात्कार अनुसूची प्रविधि का उपयोग किया गया है ।

उपलब्धियां– अध्ययन से ज्ञात होता है कि 72 प्रतिशत महिला प्रतिनिधियों के परिवार के सदस्य कई वर्षो से राजनीतिक क्रियाकलापों से जुड़े हुए नहीं हैं। 65 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का कहना था कि उनके रिश्तेदार राजनीतिक क्रियाकलाप से जुड़े हुए हैं। 70 प्रतिशत महिला प्रतिनिधियों ने बताया कि वे रणनीति के तहत अपने मित्रा बंधुओं को राजनीतिक से जोड़ते हैं। 66 प्रतिशत महिला प्रतिनिधियों ने बताया कि वे किसी राजनीतिक दल से जुड़े हुए नहीं हैं। 58 प्रतिशत महिला प्रतिनिधियों का कहना था कि महिलाओं को राजनीतिक क्रियाकलाप में कई प्रकार की समस्याओं से जुझना नहीं पड़ता है। 65 प्रतिशत पंचायत महिला प्रतिनिधियों ने कहा है कि वे राजनीतिक विचारधरा में अभिरूची नहीं रखती है। 60 प्रतिशत महिला प्रतिनिधियों ने बताया कि पंचायती राज में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण मिलने से लाभ प्राप्त हुआ है तथा महिलाओं के मनोबल में इजापफा हुआ है। महिला पंचायत प्रतिनिधियों का यह भी कहना था कि पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं का जो राजनीतिक समाजीकरण हुआ है उससे महिलाएं धीरे–धीरे राजनीति में सक्रिय हो रही है लेकिन अधिकांश पंचायत महिला प्रतिनिधियों का कहना था कि उनके घर की महिलाएं जुलुस तथा धरना में बहुत कम शामिल होती है। अध्ययन से जो तथ्य प्राप्त हुए हैं उससे स्पष्ट होता है कि 25 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया है कि राजनीति अब महिलाओं के लिए नशा जैसा हो गया है ।

*****

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रॉबर्ट सिगल, 2003, पॉलिटिकल थ्योरी ए पिफलोसोपिफकल पर्सपेक्टिव, इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स, नई दिल्ली ।
2. पॉवेल एल, 2003, पॉलिटिकल कैमपियन कम्युनिकेशन : इनसाइड एण्ड आउट, एलेन एण्ड बैकॉन, न्यूयॉर्क ।
3. गोल्डहेमर, एडवर्ड सिल्स, 2008, इन्ट्रोडयुसिंग सोशल थ्योरी, पोलाइटी प्रेस, कैम्ब्रिज ।
4. आर0 बियरस्टेड, 1958, द सोशल ऑर्डर, ओरियन्ट पब्लिकेशन्स, न्यू दिल्ली ।